

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

श्रीभक्तिग्रन्थमाला



ग्रन्थाङ्क ५०

R. N. 163

महानुभाव भगवद्गी

श्रीपद्मनाभदासजीके श्लोक-पद

तथा

श्रीगोकुलाधीशजी महाराजके

२५ वचनामृत



संशोधक : चमन्तगाम हरिकृष्ण शास्त्री

अमदावाद



प्रकाशक : लालूभाई छगनलाल देसाई

सन्तीरिड, ११०, गंधा उपाय

अमदावाद.



कि. ०-४-०

०२३१०

પ્રથમાવૃત્તિ



પત્ર ૨૦૦૦



ગુજરાત સરકાર
અમદાવાદ
મુદ્રણ મંત્રાલય

મંચત ૧૯૮૪

મુદ્રણસ્થાન : વસંતમુદ્રણાલય : અમદાવાદ

મુદ્રક : ચંપનલાલ દિશરલાલ મહેતા

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય

ગિજરાતી કાપાસરઝિટ વિભાગ

અનુક્રમાંક ૧૪૩૮૭ વર્ષિક

પુસ્તકના નામ પદ્મનાભદ્રાશરૂદે ૪૦ પદ અને
ગોકુળાદીશરૂદે ૨૫ વચનામૃત

વિષય તે ૨૨૨૧૧

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ॥

॥ श्रीमदाचार्यचरणकमलेभ्यो नमः ॥

श्रीपद्मनाभदासजीकृत ४० पद

—•—
पद १. राग भैरव.

श्रीलक्ष्मणभटपुत्र पादरज बहुत राज-
धानी ॥ दरस परस होत सरसावेशित चित्त
चित्त ब्रजजन घरघर रवन कला केलि जानी
॥१॥ कनकांगन रंग द्रवत सदन उर ब्रजपुर
भावसों मिलि बुद्धि सानी ॥ पद्मनाभ सब
विध संपत्ति दंपती आनंद अदेय दानके दानी॥२॥

पद २ राग देवगान्धार.

श्रीवृन्दावन रम्यक रसदानी ॥ श्रीवल्लभ-
पदकंज माधुरी, तिनकूं जिन अलि यहां रुचि
मानी ॥१॥ भ्रूविलास अन्तःपुर गह्वर रासस्थली
दृगन दरसानी ॥ नन्दसूनु सुख अवाधि यहांलों

मंडल ओर पास रुह पानी ॥२॥ वागधीश यु-
 वजन रसमूली, मधुराई मुरली मधु जानी ॥
 अटपटी बात लपेट बहुत सखी, सुरझावत सब
 ब्रज अरुझानी ॥३॥ अंतरंग बहिरंग प्रसंगित
 मधुर मधुर बंसी गुन गानी ॥ सप्तरंध्र वहे प्रकट
 कोलि जे प्रचुर करी सखी बहुत सयानी ॥४॥
 नखशिखाग्र संकुलित विविध निधि, कृपाग्रंथि
 सम्यक सुख लानी ॥ सन्मुख भये नेह वरदे-
 श्वर, पाछें पुलिन ठोरकी ठानी ॥५॥ भूखन
 भाव वसन पट पहेरे, ललित घटा गहरानी ॥
 दशनखचन्द्र किरन रंजित वहे, पद्मनाभ अ-
 खियाँ अरुझानी ॥६॥

पद ३ राग गोरी.

शोभा रसमय भाव प्रकट करि श्रीवल्ल-
 भवरदेहम् ॥ नखशिखादि ब्रजवधूविरहनी व्या-

पियुगलस्नेहम् ॥१॥ वृन्दारण्यइन्दुसंपुट हृदय-
 शूढकन्दरागेहम् ॥ पद्मनाभ सुतहितकृत मार्ग
 नेह मुरलिकायेहम् ॥२॥

पद ४ राग टोडी.

हेलि नवनिकुंजलीलारसपूरित, श्रीवल्लभ
 तनमन मोरे ॥ अंगअंग विपिन छवी निधान
 घनदामिनी युति फलफल प्रति दोरे ॥१॥ क-
 रत प्रवेश विरहवह्निसुत भूतल बहुत कठोरे ॥
 पद्मनाभ मधुरेश विचारत श्रीलक्ष्मनभटसुत
 ओरे ॥ २ ॥

पद ५ राग देवगन्धार.

यथा नेहवेहं तथा पुत्रदेहं प्रवेशस्वरूप-
 प्रमाणम् ॥ वेणुनाद वृन्दावन तद्रूप गोकुलस्त्री
 निरोधप्रबोधित ए सह सूत्रसमानम् ॥१॥ तत्त-
 द्भावभूषिता मूर्ति एतावत्कृत अनुसन्धानम्
 ॥ पद्मनाभ मधुरेशचरणरुह राग परम सौभा-

ग्य अलंकृत प्रभुदास मधुकर मधुपानं अभय
अदेय दीय दानम् ॥२॥

पद ६ राग रामकली.

श्रीमधुरेशो अवधि कृपा ब्रज देशे आ-
विर्भावप्रसंगे ॥ शरदनिशाकर वीक्ष्य मधुरवर
मन तनु घन अभ्रसलिल रम्यक भरवृष्टि वेणु-
सुरंगे ॥१॥ विविध विहार भये गिरिगह्वर प्र-
सरित रन्ध्रतरंगे ॥ नेहसंलग्न सप्तवेध सर्खा
वधूवृन्द आकर्षे समग्रे पद्मनाभ संकुलित सक-
लत्रिय बंधित पाश अभङ्गे ॥२॥

पद ७ राग भैरव.

देखे मदनमोहन देखियत जिततित करु-
णामय श्रीवल्लभ मूरति ॥ कहत न वने मग्न
स्नेहरंग, आनंदसंपत्ति सब लालसा रासरसकी
भ्रुकुटी पूरति ॥ १ ॥ नखसिख प्रतिचित्त देय
अवलोकित पैयत निधि वृन्दावन जे दूरति ॥

पद्मनाभ प्रभुचरणकमलयुगल अमलसों गोपी-
जनवल्लभकी स्फूरति ॥२॥

पद ८ राग सारंग.

हेली रसमय श्रीवल्लभसुत प्रगट भये
आज ॥ अंग अंग द्युति तरंग मधुरावली केलि
प्रसंग द्रग विलास भ्रोंह भाल कमनीय साज
॥१॥ लीलामृत रसाल प्रेम भक्ति के प्रतिपाल
स्मरण करे निहाल भावकी बांधे पाज ॥ पद्म-
नाभ वागवीशकुंवर केलि कल अखिल अव-
गाहत प्रेमसिंधु व्रजजन सिरताज ॥२॥

पद ९ राग डोड़ी.

बलिबाल मुख सुखरूप परमानंदमय श्री
लक्ष्मणनंदनकी छवी न्यारी ॥ नील सजल
चपला युत अंग अंग द्युति तरंग नख शिख
प्रति ऊलही रहत भावकी घटारी ॥१॥ दरस
परस होत सरसमन प्रचंड सघनवन फेलि रहत

कृपादृष्टि वृष्टिकी उजीयारी ॥ पद्मनाभ प्रभु-
रसाल वागधीश बल्लभ मूरती अवनी रवन
भवन भाव तारेकी तारी ॥२॥

पद १० राग असावरी.

पान पीकसों रंध्र मूंद गयो कणित वेणु
वृंदावन अधर छुवायो ॥ स्वर सब मूंद गये लिये
हाथमें निहारत फूंकसों सुधारत पुनि श्रीदा-
मातें धुवायो ॥१॥ परेरी पराग भुवपर अनुराग
मिलि गायो मधुरमोद उपजायो ॥ ब्रजजन
फुलवारी बेठे जहां विरह मकरंद सब गोकु-
लन चखायो ॥ जिततिततें सुध लावत सखी
सब भई वेसी गति जेसी जा दिन बजायो ॥
पद्मनाभदासप्रभु रसिककुंवर वर लाल गिरिधर-
जूको कर प्रसंस समलायो ॥

पद ११ राग असावरी.

श्रीलक्ष्मणलालकी निकाई कहांलो कहूं-

रा माई॥ मधुरावृत मधुर निकुंज मधुररस ता-
 हीतें मुरलीरंध्र वहे फेलि परी मधुराई ॥ १ ॥
 नेह निबिड अरण्य निकर ब्रजजनमन घन
 गति प्रति रास घटा सजलाई ॥ वसायो मधुर
 उत्सवपें सरसभाव शरण उपटाई ॥ पद्मनाभ
 मधुर वचन मिंडवारी करी करि प्रेम प्रणीत
 अपनाई ॥ २ ॥

पद १२ राग सारंग.

प्रगट भये श्रीवल्लभकुमार । आनंद सं-
 पत्ति सब ब्रजमंझार । हृदय निबिड गहवर वि-
 लास वन वाक्नृपतिको अनुभवी मधुप शरीर
 धरी कल्लुक करेंगें सौरभ विस्तार ॥१॥ परिवृढ
 रत्नरासतरुनीन मय वृंदाविपिन विरह सिंगार ।
 छबीकी ललिततरंग अंगअंग संग स्वामिनी कृपा
 निज धाम अभिराम श्यामघन सूचन करत द्रग
 भ्रोंहवार ॥२॥ रसिकनको रसदान करन हित

यशमय उर पहेरेहैं हार । अतिप्रवीन त्रिय
 नखशिख प्रति नित्य केलि संकुलित सकल वपु
 करत प्रवेश सुत पराग लेनको फूलकमल मध्य
 मूलवार ॥३॥ घोखलालको नेह निरंतर बीज
 ब्रयो अवनी अवतार ॥ प्रचुर प्रचंड भयो द्रुम
 जिततित भाव खंड अविरोधि अखंडित रस-
 मंडन विट्ठल पद्मनाभ मधु फलित डार ॥४॥

पद १३ राग सारंग.

याहीतैं मुकुटमणि ब्रजजनके वागधीश
 ढोटा प्रसंगे । जवतैं निकुंज निधि प्रकट भइ
 मधुराई सब सौंज लाए, याहीतैं विरहवन्हि उ-
 द्योत किए कुंवर रास तरुणी सदृश इनही संगे
 ॥१॥ हिलगही हिलग गिरधरकी अंग अंग प्रति
 तरंगे ॥ पद्मनाभ वेणु नृपति आत्मजको स्व-
 रूप यथार्थ येह जवलों रहे रसभर एक अंगे ॥३॥

पद १४ राग काफ़ी.

श्रीमद्वल्लभ आनंद परमानंद अंग अंग
 रासे ॥ शरदमासे ब्रजवासे दिनदिन प्रति नव
 हुलासे रवन वृंदावन विहारके हेत भूविलासे
 ॥ सरलकेश अतिसुदेश विरहवेश साजे ॥ तेल
 फुलेल त्याग कीये अद्भुत छबी छाजे ॥ २ ॥
 भ्रुकुटी फरकत भावभरसों तिलक चमक भाल
 ॥ पोंछत पट वहे रहे पलक नेन लाल ॥ ३ ॥
 बदनकांति अनूप भांति सुखसमूह नगरी ॥
 हसत लसत प्रतिबिंबत श्याम हास सगरी ॥
 ४॥ नख शिख प्रति मधुर खानी तामें मधुर
 बानी ॥ मुरली मधुर मोहन अधर याहीतें
 जानी ॥ ५॥ उदर उदधि गुण अथाह सबे ला-
 लसंगी ॥ वक्रिम काटि ग्रीव गुल्फ रहत ज्यों
 त्रिभंगी ॥ ६॥ धोती उपरना पीतांबरसों अनु-
 रागे ॥ जानो ब्रज पलाश कुसुम रासद्युति लागे

॥७॥ फरहरात विप्रयोग छोरमें झकोरे ॥ अर्ध
 ओढी अर्ध आगे नेह मांह बोरे ॥ ८ ॥ लीला
 अखंड अभिनय भुजदंडमांझ सगरे ॥ तनक
 हलन चलन होत फिरत भेद बगरे ॥९॥ नखाशिख
 चरणारविंद निज प्रताप सघनी ॥ पावत पर-
 माब्धि निधि नेह करज लगनी ॥ १० ॥ मौन
 साधि काज साधि प्रेम निर्वाह कीनों ॥ गमन
 करत गोपी गृह जब संन्यास लीनो ॥ सदाई
 संपत्ति सदा प्रगट गिरधर इन वहेहें ॥ पद्म-
 नाभ ओर विचारत भ्रम व्यामोह वहेहें ॥१२॥

पद १५ राग काफ़ी.

रागरंग रंगी रसको रासरंगरंगी । श्रील-
 क्ष्मणभट्ट ये लाल रसकी मुरलिका रंध्ररंध्र
 घरघर मधुरामृतपूरित प्रियाप्रसंग सावेष्टित
 सुंदर सुतडित घनतरंगी ॥१॥ स्वर वर रस
 समुद्र प्रगट संपुट कुंज संगी ॥ पद्मनाभप्रभु

रसाल दान देत लेत गोपी नेह द्रव्यसौन्दर्य
जुरी भरी रही प्रेम पेंठ तीन्यो लोक त्रिभंगी॥

पद १६ देवगान्धार.

कहां लों कहों आलीरी श्रीलक्ष्मणभट्ट
सुतकीजु निकार्ई॥ नख शिख प्रति आनंदकोलि
बेलि फरी निबिड गूढ वक्र भली चरणकुंज द्वार
सेवे सुखमय निधि पाई ॥ १ ॥ द्रग विशाल
मांझ लाल प्रगट रसावेश कीये केशनका आभा
मुकुट डोलन समुदाई ॥ वृंदावन चंद विरह
भूषन अंगअंग लसत हंसत वदन रहत सदा
रोमरोम ब्रजपुरेंदु वयन छवि छाई ॥ २ ॥ युगल
रंग विप्रयोग उपरना उपवीत अरु कंजमाल
यही भाव भाई ॥ पद्मनाभ प्रभु उदार श्री
वल्लभ अवतार रहस्यावृत विपिनकृत सुनहो
रसिकराज प्रतापलेश मात्र गाई ॥ ३ ॥

पद १७ राग काफ़ी.

महारसरंगरूप दानी श्रीवल्लभ मुखवि-
 लास ॥ निज प्रसंगकी तरंग अंगअंग लीला
 ललित गलित स्वेद भ्रुकुटी भंग आवत डग-
 मगी डगन देखे बने पाछे प्रेम विवश प्रभुदास
 ॥१॥ प्रेम आविर्भाव भूषण रसमय प्रकाश ॥
 हलन चलन जमुना तीर नेह गंभीर निवडा-
 वलीत अंतर गांस ॥२॥ केलिसागर परमानंद
 चाहनमें जित तित सखी दृष्टि परत सुखस-
 मूह रास कदम मंदिर रमन राज सुचिन्त उर
 हुलास ॥ पद्मनाभप्रभु विचित्र मनोहरमय
 मुरली कृतकृत्य ब्रजवास ॥३॥

पद १८ राग मारू.

कोउ रसिक नहीं या रसको ॥ वागधीश
 वचनामृत गहवर पराकाष्ठा प्रेम प्रसंगित
 ब्रजपुरवधू स्वरूप निष्ठा सुनिसुनि काहुन

कसको ॥१॥ वृंदावन आनंद उदाधिको पार
 नही कहूं जसको ॥ श्रीलक्ष्मणसुत चरणकमल
 परागमधुपूरित पद्मनाभ अली ताको हे
 चसको ॥ २ ॥

पद १९ राग ईमन.

प्रगट पूर्णानंद वागधीश मधुरमूर्ति स्फू-
 रती ब्रजदेश मधुरास उपदेशं ॥ वेणु वृंदावन-
 गेहमध्य उपस्थित नेहवेह प्रवेश अमित संदेशं
 ॥१॥ दान कृपा विविध वरनिक रंग रूपद्वार
 महाभागाब्धिभावखंडप्रवेशं । यशोदाउत्संग
 रासादिलीलामृत तत्पादप्रताप पद्मनाभ शि-
 रसि छाय आवेशं ॥

पद २० राग सारंग.

श्रीमद्वल्लभरूपसुरंगे ॥ नखसिख प्रति
 भावनके भूषन वृंदावन संपत्ति अंगअंगे ॥१॥
 चटक मटक गिरिधरजूकी नाई एनमेन ब्रज-

राज उछंगे ॥ पद्मनाभ देखेही बन आवे सुध
रही रास रसाल भूत्रंगे ॥२॥

पद २१ राग केदारो.

श्रीलक्ष्मणसुत नीके गावे ॥ प्रभुदास द-
मला बडभागी तिनकुं पुनिपुनि आप सिखावें
॥ प्रेमविवश व्हे श्रीवल्लभप्रभु नेनन सेनन अर्थ
जनावें। प्रकट प्रत्यक्ष यशोदानंदन रसिकसभातें
सबे बतावे ॥२॥ वृंदावन रम्यक अवनि रस
उरसंपुटतें कोउ न पावे । पद्मनाभ गिरिधर
रसलीला वेणुनादकी बतियां भावे ॥३॥

रासोत्सवपद आरंभ.

पद २२ राग केदारो.

अवनी रमन मधुरमय वृक्ष उदभव प्रचं-
डम् ॥ भाव शाखा सरल हरित घनतडित सम सु-
खद छाया ब्रजप्रेमखंडं ॥१॥ पत्र किसलय निबिड
युवतिवर वशीकर वपु मोहात्मकमधुरदेहं ।

राग अनुराग भरि निकर शशी मोदकर मं-
जरी मोर निजनेह येहं ॥ २ ॥ मधुरदानाव्रत
रसद बहु फलितफल स्वाद अधिकार भंडार-
भवनं । चलविचल रहसि वृंदावनं सूचनं प्र-
कट एतादृशं पादपद्मम् । पद्मनाभादि ऋषि
पुष्टिमार्गागमी उपासित चरण सेवित प्रसादं
। मधुरोत्सवात्मक रूपगह्वरारण्य वदति ब्रज-
वल्लभी वल्लभनादं ॥४॥

पद २३ राग केदार.

विविध रसरास वृंदावनं तादृशं वल्लभ
उर प्रेमदेश वीक्ष्यम् । तडितघनद्युतिसदृश
द्विजाविव उपस्थित श्यामरूपाकृति अंग नि-
रीक्ष्यम् ॥१॥ यशोदाउत्संगलीलादि रसस्वाद
सुखनिकर आनंदागिरिशिखरशोभं । रसलीलै
कद्रुमनिर्मित निविड वर रहस्य गह्वरारण्य
गुप्तगोभं ॥२॥ प्रेमपारंगव्रजभक्तव्यापाराहितअ-

हर्निश भावदृश विशदगमनं ॥ काश्चिद्गशाश्चार-
 रस काश्चित् दधिदानरस काश्चित् व्रजराजरस
 कोलिभवनं ॥३॥ काश्चित् शैलधरणं काश्चित्
 तांडव नृत्यलुब्धलोभं ॥ काश्चित् श्रीअंग आ-
 नंदनिधि सदृश नेहद्रव्यादिसहसमावेशं ॥ ४ ॥
 काश्चित् भूषण वसन काश्चिद बर्हापीड काश्चि-
 द्रम्यक कटाक्षनिरोधं॥काश्चिदभिनय अलकवेप-
 मानकिंजल्कं व्यापारयुतप्रबोधं॥५॥ सर्वात्मनि-
 वोदि कृपा वेणुमदमत्त एतादृश लक्ष्मणसूनुहृद-
 यम्॥पद्मनाभादि ऋषि सत्तरंध्र प्रवेश उदाग-
 वेश मृदुद्रवितहृदयम् ॥६॥

मद २४ राग केदारी

निकुंज वैभव दामोदरदास देखी चाहत
 हैं मिल्यो सखीयनमें टहल हित ॥ कनक
 भूमिपर कदंब सघन विपिन ठोर ठोर लता लूम
 लूम रही जगमगात रवन भवन रावटी जित-

तित ॥१॥ निज स्वरूप निकट जमुनाकूल दोउ
 रत्नखचित छतरीनकी पंक्ति जहां केलि हे अखंड
 नित ॥ पुलिन नलिन निकर शिखर सोभा
 कलु कहीं न जात सारस हंस मोर कीर को-
 किल कूजतहें गान करत मधुव्रत ॥२॥ निरख
 गौर श्याम अंग लुभित चित्त करे प्रसंस लक्ष्मन
 भट सुत उदार वचन दीयो दमला प्रत ॥
 पद्मनाभ कृतकृत्य भये दोरी चरणकमल गहे
 पुष्टिपक्ष वेन कहे एक जन्म राज यह कीजे मत॥

पद २५ राग मारु.

सरस रमन गिरिधरन अंग अंग रंगमय
 कहं कहा लक्ष्मणभट सुतकी निकाई ॥ विरहे
 समाज साजे भूषण विसद भ्राजे लाजे ब्रज
 जन भाव तादृशता तकतोले रहि छवि छाई
 द्रगन अरुनाई ॥१॥ ठाडे बंसीबट तट दम-

लादिक ओर पास कुंजस्थली सुयश ध्यान
 समुदाई ॥ करतो उन्नत करि कबहुक उर धर
 फिरि मंजु कुंजमांझ प्रेम पाज बांधि रीति
 रसमय बताई ॥२॥ निकुंज मोर कुहुक मारत घूमर
 घूमर घटा आई गरज सुहाई ॥ जमुना हिलोर
 सोर पवन झकोर थोर कोकिला लोल रोर कदंबा
 दिक द्रुम प्रचंड लता विलुलाई ॥३॥ रंध्रंध्र
 वृंद वृंद अलि गण अति प्रेममग्न गावत म-
 लार राग रंग वितान छाई ॥ पद्मनाभ चप-
 ला चमक रवन भवन जटित गिरिधर पिय-
 प्यारी बेठे पत्र डोले नील पीत संपत्ति दरसाई ॥

पद २६ राग मलार.

रसपूरित श्रीवल्लभ मूरति अंगअंग नख शिख
 वर, दरसपरस होत प्राप्ति परम पुरुषार्थकी ॥
 वेणु रंध्र मारग जीतने रह निबिड नेह मधुरा-

बलि वेष्टित ललित त्रिभंग, समाज सरस सौ-
 दर्य कलाप भ्रमज एतादृश पथिकनि पर छांह
 परत मनरथ सारथि की ॥१॥ अतिउदार आ-
 त्मजप्रद मध्य फेलि ब्रज कीरती, ता रथकी ॥
 पद्मनाभ प्रभु हे सर्वोपर मधु संगमविलास
 अनुभव नृप अति अधिक अवधि भई, यहां
 स्थित प्रबल कटाक्ष कृपा अनुचर सब रास-
 स्त्रीभाव निजवैभवसों सिद्ध करत सुखार्थकी ॥

पद २७ गग गोरी

प्रगट भये घनचंद्रमा श्रीलक्ष्मणभट्ट गेह ॥
 नवनिकुंज लीला लिये रहसि सुधानिधि नेह
 ॥१॥ संगमभाव सिंगार हों सोभा वरनी न
 जाय ॥ गृह गृह प्रति सब सुंदरी सोभा रहन
 मन अरुझाय ॥ २ ॥ रासविलासक्रीडा करी
 मुरली मधुरे गान ॥ बर्हापीडनटवरवपुसंगम

साज समान ॥३॥ श्रीवृंदावन भूषण मुख सोभा
 हे अनूप ॥ दृग विशाल रसरंग भरे निजमें ललि-
 त स्वरूप ॥ ४ ॥ सरल केश अतिसोहने श्याम
 सचिक्कन भाय ॥ झलकन मुकुट आभा लिये
 पिय मुख सुख दरसाय ॥ ६ ॥ ललित क-
 पाल मुकुर मृदु प्रतिविंवित आनंद ॥ वह सोभा
 सुख जानवी सब ब्रज जन मन इंदु ॥६॥ स्ने-
 हार्द्र मंडल गंड वदरीयां सुरंग सुरंग ॥ वह
 सोभा संध्या समय सब निशि केलि तरंग ॥७॥
 हंसन खेलन मृदु बोलन संगम भाव सुहाय ॥
 बहुत होत जब सोच यह सोभा उरलाय ॥८॥
 बक भ्रोंह वहै जात हे कूजत वेणु रसाल ॥
 साइ विध यहां देखीये नेन रंगीले लाल ॥९॥
 बंक चितवर्ना वेशसों चितवत ब्रजजनकी
 ओर ॥ सोई सोभा सुखद होत हे भावे लहर
 झंकार ॥१०॥ वदन देखी विथकित भये रसि-

क सकल यह भांति ॥ पलक ओट वहे उर लहीं
 जहां ब्रजजन उर लांति ॥११॥ यह आनन्द मृदु
 माधुरी सब ब्रज जन सुख देत ॥ रसिक विना
 को पावहीं भाव रसारस लेत ॥ १२ ॥ अंग
 अंग भये रंग हे वसन दामिनी साथ ॥ गुणातीत
 मधुरेशजु ताहींते ब्रजनाथ ॥१३॥ लटकमटक
 भुवि फिरनमें रसमय भावप्रकाश ॥ तहां प्रवेश
 द्वे भ्रमरको दामोदर प्रभुदास ॥१४॥ चरण-
 कमल अनुरागको बहुत होत विस्तार ॥ पद्म-
 नाभके उर बसो यानें चित होय उदार ॥

पद २८ राग मारंग.

रसिक नागर वक्त्र अनुरक्त या स्वामिनी
 वदनेंदु रमणरंगे ॥ वदरवरनं तद्रभावकरनं
 ब्रजे नासागत मुक्ता दृग भ्रुकुटिभंगे ॥१॥ पि
 च्छगुच्छावली ग्रथितभावावली निविड अल-

कावली सुधासंगे ॥ प्रणतव्रजवधूप्रार्थना
 इयमेव आरण्यतत्फलमिदमिति प्रसंगे ॥ २ ॥
 शोभाशतवृत्तनिकुंजद्विदलात्मक प्रशस्तविप्र-
 योगात्मकवर्धकअनंगे ॥ पद्मनाभदासप्रभु
 वेणुपथ प्रगट करी स्वस्वरूपदर्शक हृदय अं-
 गरंगे ॥ ३ ॥

पद २९ गग मारंग.

श्रीवल्लभस्वरूप दुर्लभ पैवां ॥ निजभावा-
 वली अंग अंग रंग रंग त्याग सिंगार सज नख
 सिखलों बाह्याभ्यंतर रसपूरित मूर्ति विविध
 केलि मधुमय अनुभव धनाढ्य सोई सत्यपंथ
 उपदेश कीये, करी सदृश अब उलटी सों भई
 सुलटी जो कहत गुरु गोपी परि यह प्रमाण
 खिलवार देखी आधिक्य आपुनपो आपु
 वखानत दुर्लभ रसमंडन यह मारंग रसिक-

नकों जैवो ॥१॥ विरह संजोग भोग भेदावली
 नेह वेह वहेहे जो बतैवो ॥ वृंदावनबिहार रस-
 सागर मथमथ प्रगट पदारथ किये सोइ नि-
 र्वाचक अनुभव अखंड रास परमानंद प्रसर
 अमितरमिताक्षराकार रस अतिउदार निधान
 कृपानिधि ब्रजजन हृदय सांचें में प्रेमतरंग प्रचुर
 भये तडिदिव बीजावली वैवो ॥ २ ॥ करत
 निरोध विहार सकलविध उर लायें मृदु इंदु
 मधु अलैवो ॥ अकथ कथा कहांलों कहीये ?
 सखी रहीये मौन साधि, धरीये चित्त वंसी
 नृपतिचरनपंकज मुख रटत जय जय जय मधु-
 रेश यह केाउ भाव परम पुरुषार्थ साधक ता-
 हींतें सर्वात्मना जाचत पद्मनाभ पदरज बल
 लैवो ॥ ३ ॥

पद ३० राग सारंग

मधुवन सघन स्वरसपूरित भ्रुकुटीभाव संकु-

लित नेहवर ॥ सहज सुगंध अद्भुत अखंडित
 निविडतम उभय विलास रासरसललित लतान
 कृत गहवर दिनकर दशनप्रभा दुहुं दिसते वाग-
 धीश रहिवेकों रह घर ॥ १ ॥ वचन माधुरी
 प्रफुल्लित हंसन लसन कल मेन मनोहर ॥ इन
 उत कोउ न अघात सुख सींचन काननको
 सोइ घन सप्त रंघ्र वंसीपथ प्रगटित शरद् इंदु
 अनुचर आगे करि प्रेम बल लरी लगी एक
 ब्रज पर ॥२॥ एकाकी न जात तार्ही अंग ब्र-
 जरत्ननमें भावनिकर ॥ पद्मनाभ यह निधि
 अवधि वाकी बिना चरण विन अंग विन मग
 चलवो श्रीवल्लभ पदरज बल तव मिलवो गो
 पीजन मार्ग पुनि आगे मधुरेश प्रभु कर ॥३॥

पद ३१ राग मारंग.

श्रीवल्लभरूप आनंद गगन अंग अंग नि

कुंजस्थली केलिघटा सजलभाव नेह रही उ-
 लहरी ॥ यमुना युगल कूल फूलनसों फूले फूल
 रावटी जटित जेति तट मणिवंध रेति ते तीय
 विहार विविध रसमय सूचित चित्त पद्मनाभभाव
 नेन्ही नेन्ही बूँदन परी ॥१॥ ब्रजरज मत्तावेश
 मार्गाब्जदिनेश तब तो दरस दरस ले उधरी
 ॥२॥ तामें केउकवार रुमझुम आवत प्रसंग पट
 ओट चपला चमक दृग लाल भ्रोंह लाल गरजत
 रज साधे गह्वर भीर प्रेमसर्मार व्है के ते
 रूरी ॥३॥ दामोदरदास आदि याही अनुभाव
 कर छांह सीतलाई ब्रजभूमिका हरी ॥ श्रील-
 क्ष्मणलाल रसमय रसाल लीलाब्धि निकर
 जाल संकुलित मधुप्रवाल ॥ पद्मनाभ कहालों
 कहे या विप्रयोग अग्नि सुतते उमरे टिटक
 रहे वेणुरंध्र सिन्धु मधु कृपानाव बेठि चली
 बधू रास पैली ओर भावभरतें उसरी ॥४॥

पद ३२ राग बिहाग.

वृंदावन विरहवह्नि चरण समीप बिन
 नाहीन लालप्राप्ति ताको प्रमाण रासमंडलमें
 पाइयत ॥ रसमय स्वरूप मधुरेशजूको गाइ-
 यत तातें ब्रजगोपी आप गुरु कर ज्ञापित ॥१॥
 प्रबल प्रचुरता प्रगट भयो प्रताप श्रीवल्लभ
 अग्नि मृदु मार्गको स्थापित ॥ पद्मनाभ वागधीश
 लीला प्राकट्य अतिउदार सुखसार जे भंडार
 कदंबादिक मंदिर रह अकह भेद तारी भाव
 इनहीकें हाथ सकल ओर कहा कहुं केलि सं-
 गम सुधापति देखित ॥२॥

पद ३३ राग सोरठ.

सुनो ब्रजजन मारगकी बातें । उबट बाट
 लूटत पंथी सब कहीयत हो ताते ॥ १ ॥
 प्रेमपुरी पद पद प्रति वासो नेह निसंक दुहा-

ई ॥ अभय ध्वजा महलनपर राजत भाव गेल
 द्रुम छाई ॥२॥ मधुरमयी फलफूल लगत तहां
 ललित लता निबिडाई ॥ पाज दुहुं दिश राज-
 हंसकी केलि कुंज सघनाई ॥३॥ सारस हंस
 चकोर मोर खग अनुचर हैं अनुरागी ॥ लगन
 लालसुं सदनसदनप्रति कल कोकिल रट लागी
 ॥४॥ रस रसाल वर ठोर ठोर पर सर वचना-
 मृत राजे ॥ उपज मनोहर कमल कुमुदिनी
 सलिल सकल पर भ्राजें ॥ ५ ॥ वेणुरंध्र मानों
 मत्त मधुपगन रमन करत हैं हेली ॥ गजगति
 चलत लगत सब अंगन स्याम लटक तरुवेली
 ॥ ६ ॥ पेंठ लगत दधि मृदु माखनकी छीकें
 छीकें सजनी ॥ याही भांति व्योहार लालसों
 परत न कबहु रजनि ॥७॥ जावन पेंठें दुहावन
 पेंठ सुखसमूह री माई ॥ पनघट पेंठ होत मि-
 सनिसमें आनंदकी अधिकाई ॥८॥ सिंघपोरकी

पेंठ अटपटी रूपरास दरसाई ॥ सर्वस्व दे दे
 लेत गोपिका दृग दृग तुला तुलाइ ॥९॥ हि-
 लगपेंठ में सेवें बिकानी तब त्रिभंगी वर पायो
 ॥ ऐसी पेंठ लगत है केउ या संग प्रेम समा-
 यो ॥१०॥ उपज मिलनकी वृंद वदनकी भीर
 बहुत वह ठोर ॥ बाजत दुटुंभि बरग्वि रहत सुख
 कथा कंदग सोर ॥११॥ प्रथम वसिये श्रीवल्लभ-
 पदकंजनगरही साई ॥ जहां पराग पद्मना-
 भादिक निधि वृंदावन पाई ॥१२॥

पद ३४ गग मारंग.

केसरी धोती पहिरे केसरी उपरना आंढे
 तिलक मुद्रा धरे बेढे श्रीलक्ष्मणभट धाम
 जन्म दिवस जान जान अद्भुत रुचि मान
 मान नखशिखकी सोभा उपर वारों कोटिककाम
 ॥ सुंदरताई निकाई नेज प्रताप अतुलताई

आसपास युवातिजन करत हैं गुनगान । पद्म-
नाभ प्रभु विलोक गिरिवरधर वागधीश जे अव-
सर हुने ते महाभाग्यवान ॥

पद ३७ राग विहाग.

मधुर व्रजदेश वस मधुर कीनो ॥ मधुर-
वल्लभनाम मधुर गोकुलगाम मधुर विट्टल भ-
जन दान दीनो ॥१॥ मधुर गिरिधरन आदि
सप्त तनु वेणुनाद सप्त रंघन मधुररूप लीनो॥
मधुर फल फलित अतिललित पद्मनाभ प्रभु
मधुर गावत अर्ली सरस रंगभीनो ॥२॥

पद ३८ राग विलावल.

श्रीवल्लभ चाहे सोई करे ॥ इनके पद दृढ
करि पकरे महा रससिंधु भरे ॥ १ ॥ नाथके नाथ
अनाथ के बंधु औगुन चित्त न धरे ॥ पद्मना.
भक्त जान आपुनो बूडत कर पकरे ॥२॥

पद ३७ राग बिलावल

श्रीविठ्ठलनाथ झलत हे पलना ॥ मात
अकाजू हरखि झुलावत लेले सुरंग खिलोना
॥१॥ चुटकी दे दे हँसत हंसावत निरखि वदन
मन फूलना ॥ पद्मनाभ प्रभु देवोद्धारार्थ प्रक-
ट भये श्रीगोकुलके ललना ॥२॥

पद ३८ राग गौरी.

श्रीलक्ष्मण गृह आज बधाई ॥ श्रीवृन्दा-
वन भूखन सुख प्रकटित ब्रजलीला संपत्ति
सुखदाई ॥१॥ प्रचुर भावज्ञ भूतल रसिकनके
मृदु मूरति जिनके हित आई ॥ भाव विभु
संपत्ति लीए अंगअंग रंगरंग मेह देह भूखन
द्युति घनतडिदिव दरसाई ॥२॥ सहज स्वभाव
सकल ब्रजकेली घटा गहराई ॥ वरसन मेह
प्रेम ब्रजवासी दुरिदुरि दरसपरस सहस प्रभा-
वते पद्मनाभ वलैया जाई ॥३॥

पद ३९. रामकली.

रसना श्रीवल्लभ नाम उचार ॥ श्रीविठ्ठल
गिरधर श्रीगोविंद बालकृष्ण सुखसार ॥ १ ॥
श्रीगोकुलपति रघुपति जदुपति श्रीघनश्याम
उदार ॥ श्रीगोकुल यमुना वृंदावन निशदिन
करत विहार ॥ २ ॥ पद्मनाभ परिवार सकल
फल कल्पवृक्ष सिंगार ॥ लीलामृत रसपान
करावत रसिकन वारंवार ॥ ३ ॥

पद ४० राग रामकली.

भज मन श्रीगोकुलसुखसार ॥ श्रीवल्लभ
श्रीविठ्ठल श्रीगिरधर निशदिन करत विहार
॥ १ ॥ यमुना कल्पलताके सन्मुख करगही ढिंग
वेठारं ॥ ब्रह्मछोकरतर ब्रह्मसंबंध दे दीने रस-
में डार ॥ २ ॥ श्रीवल्लभकी शरण न आये ते
जन भुव के भार ॥ पद्मनाभ प्रभु वागधीशकी
ये विधि ब्रजकी नारी ॥ ३ ॥

पद ४१ राग जेजेवंती.

वागधीश रूपरंग जानतहें व्रजवधू मुर-
लिका मग अनुभव करि आई ॥ राग अनुराग
स्याम अंगअंग कुंजनमें प्रवेश विद्या भलेई
सिखाई ॥१॥ नेह वेह छेह गये मन क्रम व-
चन लहे येवो तदपि इन घातनमें पाई ॥ भा-
वनके गृह कीये भावनके पेंडे लीये ठोरठोर
भावस्थली भाव लपटाई ॥२॥ हावभाव चा-
तुरी विहार व्रज व्याप रह्यो रसकर ईंदु उरझानि
उरझाई ॥ जिततित प्रेमपेंठ नगरनागरवर प्र-
गट प्रसंग वन वानिक बनाई ॥ ३ ॥ छबिकी
ललित तरंग रंध्ररंध्र फेलिपरें तामे श्यामलाल
सब वाल अपुनाई ॥ पद्मनाम मधुनिधि ठाडे
उरवांही मधुरेश देत ले ले विधि छिपाई ॥४॥

पद ४२ राग सारंग.

एसी बंसी बाज रही वनघनमें व्यापी

रही ध्वनि महामुनिनकी समाधि लागी ॥
 भयो ब्रह्मनाद उठत उग्र आह्लाद जहांतहां
 ब्रजघोषरत्नवृंद भये सब त्यागी ॥३॥ रासादिक
 अनेक लीलारसभाव पूरित मूर्ति मुखारविंद
 छवि धरे विरह अग्नि जागी ॥ तब वेणुनाद-
 द्वार अब लक्ष्मणभट सुत कुमार पद्मनाभ
 देवोद्धार अर्थ त्यागी ॥२॥

पद ४३ राग जेजेवंती.

माई आज तो राखी वंधावत कुंजनम
 दोऊ ॥ फूले रसभर दोउ यह छवि लसे
 जोऊ ॥ १ ॥ पचरंग चूनरी लागी विचविच
 मोति पोऊ ॥ ललितादिक राखी वांधत अति
 सुख होऊ ॥२॥ दक्षिणा रहसि देत जेसी चाहे
 सोऊ ॥ युगलचरनकमलरति पद्मनाभ होऊ ॥३॥

पद ४४ राग सारंग

सरस अवनिभवन आनंदघन कुंज छवि

पुंज सुख सहज शोभा ॥ रसिकवल्लभ परम
नवलयश अनुपम रूप किरणामृत बहु भांत
गोभा ॥ १ ॥ निजनिरोध अंग अंग पोढे सुख
अपने रंग विविध नव केलि रसरंग रहे लोभा ॥
अपूर्ण हे ।

पद ४५ राग सारंग.

ढाडिन नाचे रंगभरी । ब्रजरानीकी कूख
सिरानी सब सुख फलन फरी ॥१॥ गृहगृहते
गोपी जुर आई देखन कौतुक री ॥ होत वधाई
मंगल गावत देत दान सगरी ॥२॥ तव यशोमती
सुन्दरी पहेराई हरखित मोद भरी ॥ हँस बोली
यों कहत महारि सों देखन लाल अरी ॥३॥ तव
जसोमती ले लाल दिखायो शोभासिंधु खरी ॥
पद्मनाभ सहचरी छवि निरखत वारत सर्वसरी ॥४॥

॥ इतीश्री पद्मनाभदासजीके ४५ पद संपूर्णम् ॥



नित्यलालास्थ गोस्वामी श्री ६ श्री गोकुलाधीशजी महाराज के

२५ वचनामृत.



वचनामृत ?.

कोई समे नंदगाँवमें कूवापें एक वेरागी
बेठ्यो हतो । वाको एक ब्रजवासिर्नाने पूछो,
“ जो बाबाजी ! दरसन करी आये ? ” तब वा
वेरागीने कही, “ जो में तो दिनभरमें आज
दरसन नहीं किये ! ” तब वा बाईने कही;
“ जो तू चले तो आपुन संग चली दरसन करी
आवें । में जेहर गहेना पहिर के आउं । तू यांहीं
बेठ्यो रहियो । ” तब वा वेरागीने कही; “ तू
वेग अइयो ” इतनो कही के वेरागी बेठ्यो;
ओर वह बाई जेहर धरिवे गइ; सो फिर न
आइ । ओर वह वेरागी राह देखदेख संध्या

समो भयो तब वहां ही सोय रह्यो, सो रात्रिकुं नींदमें वह बेरागीकुं सुपनो भयो, तामें देखे तो वह बाइ संग मिलके दरसनकुं गयो हे, सो दरसन करत श्रीनाथजीने अपनी पागमेंसों गुलाबको फूल वा बेरागीकुं दियो ओर श्रीदा-उजीने गेंदाको फूल दियो, ओर हु सुख बहुत भयो, सब रात्रि सुखमें बीती । सबेरो भयो तब बेरागी जाग्यो । इतनेमें वह बाई कूवापें जल भरिवेकुं आइ । तब वह बेरागी बाईसुं लरिवे लाग्यो । ओर कही, “जो तू मोंकुं कूवापें बैटाय जाय सोय रही, मोकुं दरसन विना राख्यो, ओर सब रात जाडेसुं मायों ” । तब वा बाईने कही, “जो बाबाजी ! जूठ क्यों बोले हे ? आपुन दरसनकुं चले हते ” । सो तब बेरागीने कही, “जो कब चले हते ? ” तब वा बाईने सुपनाको सुख सब कह सुनायो । तब

वा बेरागीकुं बडो आश्चर्य भयो । सो वा बाईकुं साष्टांग दंडवत् कियो तब बाईने कही “ जो बाबाजी ! तेने कहा ब्रज सूनो देख्यो ? अबी तो ब्रज हे ” ।

वचनामृत २.

एक समे श्रीगुसांईजी ठकुरानी घाट पे विराजत हते । दोनों लालजी संग हते । तामें श्रीगिरिधरजी आपकी दाहिनी ओर विराजत हते । ओर श्रीगोकुलनाथजी बांदी ओर विराजत हते । संध्या को समोहतो । कछु अंधेरो भयोहतो । वा समे श्रीजमुनाजीमें एक बडको पतौवा पैर्यो जातहतो । तब श्री गुसांईजीने श्रीगिरिधरजीसुं कही, “ जो गोवर्धन ! देख केसो सुंदर ढांकको पतौवा पैर्यो जाय हे ? ” तब श्री गिरिधरजीने कही, “ हां, काकाजी ! ”

ता वातकी श्री गोकुलनाथजीको बहुत रीस चढ़ी । सो श्रीगुसांईजीके आगे तो कलु बोले नहीं । जब घर पधारे, तब श्रीगिरिधरजीसुं कही, “ जो दादाभाई ! काकाजीने बडको पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो सो तो ठीक; जो काकाजीको तो वृद्ध श्रीअंग भयो हे, ओर संध्याको समय हतो, जासुं बडके पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो। परंतु आपने हमें हां कैसे मिलाई ? तब श्रीगिरिधरजी बोले; “जो भाई ! काकाजीको श्रीअंग वृद्ध भयो जासुं दृष्टिबल कलु थोरो होयगो, सो ये वात कैसे संभवे ? पुरुषोत्तमको दृष्टबल कब घटे ? परंतु काकाजी को मन वा चिरियां श्याम ढांकपे हतो, जासुं बडके पतौवाको ढांकको पतौवा कह्यो । ” तब श्रीगोकुलनाथजीने कही, “ जो दादाभाई ! “काकाजी के मनकी तो आपने ही जानी ” ।

वचनामृत ३.

एक समे श्रीगुसांईजी श्याम ढांकपे विराजत होते । बड़े पुत्र श्रीगिरिधरजी पास विराजत होते । इतनेमें मरे गधाकुं बहारवारे घसीट ले जाते होते । तापें श्रीगुसांईजीकी दृष्टि परी । तब श्रीगिरिधरजीनें कही, “ जो गोवर्धन ! यह कहा हे ? ” तब श्रीगिरिधरजीने कही, “ जो काकाजी ! यह तो बहारवारे लोग हे, सो मरे गधाकुं घसीट ले जाय हैं । “ इतनो सुनत ही आपके नेत्रनमें जल भरि आयो । ओर कही, “ जो या गधाके भाग्यको वर्नन कहांतांइ करे ? गोवर्धन ! तू मोकुं एसेही करीयो । ” ता बातकुं बहुत बरस भये । जब आपकी इच्छा लीलामें पधारवेकी भइ, तब गोविंदस्वामीको हाथ सायके कंदरामें पधारे । तब श्रीगिरिधरजी पीछे पीछे चले । तब आपने

कही, “जो गोवर्धन ! तोकुं तो अब ढील हे ।
 एसे दोय चार वेर आपने कही। तो हू श्रीगिरि-
 धरजी पीछे पीछे आये । तब आपकुं श्याम
 ढांककी बातकी सुध आई । तब श्रीअंगको
 उपरना श्रीगिरिधरजीकुं दियो ओर कही,
 “ जो यासों करियो । ”

वचनामृत ४.

एक समे श्री दाउजी महाराजकी दादी
 श्रीकमलावहूजीसों वहोराने प्रश्न कियो,
 “ जो महाराज ! श्रीमहाप्रभुजीके सेवक केसे ? ”
 तब आपने आज्ञा करी, “ जो कहा कहेनो ?
 श्रीमहाप्रभुनके सेवक साक्षात् कुंदन ” तब
 फेर विनति करी, “ जो महाराज ! श्रीगुसांई-
 जीके सेवक केसे ? ” तब आपने आज्ञा करी,
 “ जो वाह ! कहा कहेनो ? श्रीगुसांईजीके सेवक

साक्षात् चांदी । ” तब फेर विनति करी, “ जो महाराज ! सातो बालकन के सेवक केसे ? ” तब अपने आज्ञा करी, “ जो कहा कहेनो ? सातो बालकनके सेवक साक्षात् धातु । ” तब फेर विनति करी, “ जो महाराज ! आपके सेवक केसे ? ” तब कही, “ जो बहोरा ! हमारे सेवक तो कंकर-पत्थर !! ” तब बहोराने साष्टांग दंडवत् कर ओर कही, “ जो जेजेजे कृपासिन्धु ! न तो श्रीमहाप्रभुजीसुं भई, न श्रीगुसांईजीसुं भई, न सातो बालकनसुं भई, जो आपसुं भई । ” ऐसे बहोराके बचन सुनके पहले तो आप खीजे, पीछे तो प्रसन्न भये ओर बाइसुं कही, “ अरी, देखतो; तोसाखानामें, कोइ चुनडी हे ? बहोरा ! तोकुं तो बनाउंगी बनडी, ओर श्रीगोकुलनाथजीकुं बनाउंगी बनडा, ओर सहेराको सिंगार करुंगी, और कलु सामग्री । बहोरा ! काल तोको

आज्ञा हे । तब बहोराने कही, “ जो कृपानाथ !
या घडी के लिये मेनें आज तांड़ ब्रह्मसंबंध
नाहीं कियो । ”

वचनामृत ५.

ओर एक समे कसुंवा छट्ठको उत्सव नजीक
आयो । तब श्रीगुसांईजीने एक आदमीतें कही,
“ जो श्रीनाथजीकी पाग रंगारीके यहां ते ले
आव । ” सो आदमी लेयवे गयो । सो जाय के
देखे तो रंगारी रंग के घूंट भरभर के पागकुं
छिरकें हैं । सो देखके आदमीने आय के श्री-
गुसांईजीसुं कही, “ जो राज ! रंगारी या तर-
हसुं पाग रंगे हे । ” तब आप तो कहु बोले
नाहीं । जब रंगारी पाग रंगके तैयार कर लायो,
तब श्रीगुसांईजीने कही, “ जो पागको रंग
उतार ले । तब वह रंगारी पाग ले जाय के

जीतनो रंग पाग पे चढायो हतो, सो उतारके कोरी पाग पहुचायके चलयो गयो । जब दिन आठ उत्सवके रहे तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांई-जीसुं कही, “जो मेंतो वाही की रंगी पाग धरुंगो ।” तब श्रीगुसांईजीने फिर वह रंगारीकुं बुलायके श्रीनाथजीकी पाग सोंपी ओर कही, “जब तैयार होय तब पहुंचाय जैयो, हमारो आदमी न आवेगो ” । ओर पहेला जो आदमी पाग लेयवे गयो हतो ताको आप बहुत बरजे ओर कही, “ जो मूढ ! तोकुं पाग लेयवे पठायो हतो के रंगारीके कृत्य देखवेकुं पठायो हतो ? आज पीछे कोइ मत जैयो ” ।

वचनान्त ६.

एक समे श्रीनाथजी श्याम ढांकपे खेलत हते ओर गोविंदस्वामी संग हे । उत्थापनको

समय हतो सो श्रीनाथजी खेलत खेलत मोहना भंगी की कांध पे जाय चढे । सो गोविंदस्वामीने देखे । देखत खेम श्रीनाथजी की ग्रीवा सायके कुंडमें डुवाय दिये । अब मंदिरमें उत्थापन के समय श्रीगुसांईजी पधारे । सो देखे तो मंदिर सब कसुंबामय होय रह्यो हे ! तब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजी सुं पुछी, “जो बाबा ! यह कहा !” तब श्रीनाथजीने कही, “जो तुमारे गोविंदने मोकु जलमें डुवायो ।” तब आपने गोविंदस्वामी सुं कह्यो “जो गोविंद, यह कहा ?” तब गोविंदस्वामीने कही, “जो राज ! मैं कहा करूं ? आप जाय के मोहना भंगी की कांध पे चढे ।” तब श्रीगुसांईजी बोले, “जो ब्रह्म हु लुवाय हे कहा ?” तब गोविंदस्वामीने कही, “जो ब्रह्म तो नाही

हुवाय, परंतु श्रीमहाप्रभुजीके घरकी मड
हुवाय जाय।” तब श्रीगुंसाईजी चूप होय रहे।

वचनामृत ७.

एक समे श्री गुसाईजीने श्रीनवनीत-
प्रियाजीको गोविंदघाट पे पालने झुलाये। सो
चादरमें पधरायके दोय छेडा श्री गुसाईजीने
साये ओर दोय छेडा श्रीगिरिधरजीने साये।
ओर पलना झुलाये सो झुलावत झुलावत श्री
गुसाईजीको हृदय भरी आयो। ओर नेत्रनमें
जल भरी आयो। तब श्री गिरिधरजीने कही,
“जो काकाजी ! आप खेद क्यों करो हो ?
आवती सालको अपने श्रीनवनीतप्रियाजीको
सोनेके पलनामें झुलावेंगे।” ऐसे करत वरस
दिन पीछे दूसरी नवमी आइ ! सोनेको पलना
सिद्ध भयो। श्रीनवनीतप्रियजीको झुलाये।
झुलावती विरियां श्रीगिरिधरजीने कही, “जो
काकाजी ! अब तो आप राजी भये ?” तब

श्रीगुसाईजीनेकही, “ जो गोवर्धन ! वह सुख सो कहाँ ?”

वचनमृत ८.

अब ओर कहत हैं । जब श्री आचार्यजी महाप्रभुजीने संन्यास धारण कियो, तब श्री गुसाईजी ओर श्रीगोपीनाथजी श्रीमहाप्रभुजी की पास हनुमान घाट की बैठक पधारे । वहाँ जाय श्रीमहाप्रभुजीसो विनति करी, “जो राज ! आगे कलियुग हमकुं हू बाधा करेगो ?” तब श्रीमहाप्रभुजीने आज्ञा करी, “ जो हां, हां तुमकुं कलियुग बाधा करेगो ।” यह आपके वचन सुन दोनों स्वरूपके मुखारविंद शुष्क व्हे गये । तब आपने विचारी, जो हां, इनकुं दुःख तो भयो । तब फेर आपने आज्ञा करी, जो मोकुं श्रीगोपीजनवल्लभ करके जानोगे तो तुमको कलियुग बाधा न करेगो ।

वचनामृत ९.

एक समे श्रीगोकुलनाथजी परदेश पधारे हते ओर बालक सब घर हते । ओर श्रीगिरि-धरजी तो लीलामें पधारे सो बालकने श्रीगिरि-धरजीकी बैठक श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीकी बैठक सुं न्यारी राखी सो जब श्रीगोकुलनाथजी परदेश सुं पधारे, श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीके दर्शन किये, ओर श्रीगिरिधरजीकूं न देखे, तब ओर बालकनसुं पूछी, “जो दादा कहाँ हे?” तब ओर बालकनने कही “जो जेवन घरमें हैं।” तब श्रीगोकुलनाथजीने कही, जो क्यों? तातजीमें ओर काकाजीमें ओर दादामें कछु फेर हे?” ऐसे कही के तीनों स्वरूप पास पास पधरायें।

वचनामृत १०.

ओर एक समे श्रीबालकृष्णजीने लड्डुवा खायके हांडी फोरी। तिनको श्रीछोटाजीके

वहूजी सिंगार धरावत हते। सो सिंगार धरावती बेर श्रीबालकृष्णजी मुख फेरके बिराजे। तब श्रीचारुमती वहूजीने कही, “जो लालन ! यह कहा ? कछु तो कारन हे।” एसे कहि के एक हांडी लड्डुवासों भरके आगे लाय धरी ओर कही, “जो लालन ! आछी तरह अरोगो”। बाही समे श्रीबालकृष्णजी सूधे बिराजे। सो श्रीजीवनजी महाराजके दोय लालजी; १ बडे श्रीव्रजाधीशजी, २. छोटे श्रीव्रजपतिजी। बडे वहूजी श्रीगंगावहूजी, छोटे वहूजी श्रीचारुमती वहूजी। बडे वहूजीने तो श्रीव्रजनाथलाल नगरवारनको गोद बैठारे। सो श्रीव्रजाधीशजी ओर श्रीव्रजपतिजी दोनों स्वरूपनके संग एक पुष्करना ब्राह्मण नित्य खेलवेकु आवतो। याको नाम कमल हतो। सो जब कमल गयो सुन्यो तब श्रीजीवनजीके वहूजीने कही, जो जल हू गयो ओर कमल हू गयो।

वचनामृत ११.

बहुरी श्रीगुसांईजीको श्रीनाथजीने दूसरी बेर व्याहवेकी आज्ञा करी ! छ लालजी तो प्रगट भये हते । तो हू श्रीनाथजीकी आज्ञातें दूसरो व्याह कियो । तामें सातमे लालजी श्रीघनश्यामजी प्रगटे । सो घनश्याम जीके प्रकटे पीछे थोरे ही दिनमें श्रीघनश्यामजीके माजी लीलामें पधारे । तब श्रीघनश्यामजीको श्रीगिरिधरजीके बहूजी श्रीभामिनीजीने पाले पोषे; अनेक तरह क लाड लडाये । जब श्रीघनश्यामजी दोय बरस के भये, तब एक दिन खेलत खेलत श्रीगुसांईजीकी गोदमें आप विराजे । तब आपने श्रीअंगपर श्रीस्त फेर्यो, सो श्रीअंग बहुत पुष्ट देख्यो । तब आपने पूछी, “ यह कोनसे लालजी हे ? ” तब जो पास बेठे हते, विनने कही, “ जो राज ! यह तो श्रीघनश्या-

मजी आपके सातमे लालजी हे ” । तब तो श्रीगुसांईजी बहुत प्रसन्न भये ओर कही, “जो भामिनीने देवरकुं ऐसो पाल्यो ? भामिनी ! तेरी गोद सदा भरी रहेगी । ” ऐसे तीन बेर आशीर्वाद दियो ।

वचनान्त १२.

एक समे कोई संघ ब्रजयात्रा करिवेकुं चल्यो । ता संगमें एक वैष्णव हतो, सो बहुत संकोचमें हतो । सो रसोईसुं पहुंचके वही सखडीकी हंडीयां धोय, पोंछके, लाठीमें अटकाय के ले चलतो । सो जा दिन अपने देसतें चल्यो ओर ब्रजमें आयो तहां तांइ एक वही हांडी रही । सो ओर जो संगमें मनुष्य हते, विनने श्री गुसांईजीके आगे चुगली करी, “जो महाराज ! या वैष्णवने या रीतसुं अनाचार मिलायो हे । ” तब आपने वासुं कही, “ जो क्यों रे ?

तेने ऐसो अनाचार मिलायो ? ” तब वा वैष्णवने बिनति करी, “ जो राज ! आप तैलंगा हो तो योंही दूब्यो ओर योंही दूब्यो । ओर जो आप पुरुषोत्तम हो तो यह हंडीयां मेरी कहा करेगी ? ” इतनो सुनके आप मुसक्याये ।

वचनामृत १३.

नारायनदास दील्हीके बादशाहके दिवान हते । परगनो कमावते । सो एक दिन चुगली-खोरने चुगली करी, “ जो साहब ! नारायनदास सब खाय जाय हे । अच्छी चीज जीतनी आवे सो सब अपने गुरुके घर भेज देता हे । ओर द्रव्य बी अपने गुरुके घर बहुत पहुचाता हे । सो साहबकुं निगाह किया चाहिये । ” तब बादशाहने वाही क्षण हुकम कियो, “ जो नारायनदासकुं घर तें बुलाओ । ” सो आदमी नारायनदासकुं बुलायवे गयो । सो नारायनदास

वा बिरियां श्रीठाकुरजीकुं सिंगार धरावत हते ।
 ओर आदमीने जायके कही, “ जो साहबका
 हुकम हे कि येही बखत चलो । तब नाराय-
 नदासजी सेवाको कार्य घरकेनकुं सोंपके
 बादशाहके पास चले । संग पचीस पचास
 मनुष्य, ओर हाथीके होदापे बैठके चले ।
 बादशाहकुं जाय के सलाम किये । तब बाद-
 शाहने कही, “ जो नारायनदास । परगनाको
 लेखो लाओ । ” तब नारायनदासने कही,
 “जो साहिब ! हाजर हे ।” अब नारायनदासकी
 हजूरमें जीतने मनुष्य लिखवेवारे हते, तिनकुं
 नारायनदासने हुकम कियो, “ जो लेखो तैयार
 करो । ” अब महता मुसद्दी सब लिखवे बैठे ।
 ओर नारायनदास सबके लेखो तपासवे लगे ।
 ओर घरको कार्य सब मानसी रीतसुं करन
 लागे । लेखो देखत जाय ओर मानसी करत

जाय । सो दूध समर्पवेकी बिरियां द्वातमें लेखन डारी, तो श्याही सब दूधमय देखी । ऐसे करत सिंगार सब कर चुके । मुकुट धराय चुके । माला धरावत चूक गये । सो मालाकी गांठ तो पहेलेही लगाय राखी हती । ओर मुकुट बहुत भारी हतो । जासुं मुकुटके उपरसुं माला धरावन लागे । परंतु मुकुट भारी, तातें मुकुटके उपर ठेके माला न धराय सके । बहुत यत्न कियो, परंतु कोई उपाय चल्यो नहीं । तब तो बहुत व्याकुल भये । तब बादशाह सामे वेळ्यो हतो, सो बोल्यो, “ जो देख, सामे देख, ऐसैं करके फिर यों करके फिर यों कर । ” तब झट नारायनदासकुं सुध आय गई । सो मालाके दोय पल्ला तोरके, धरायके झट मरोड दे दीनी । तब बादशाहने नारायनदासकुं कही, “ जो अब घर जाओ । तुमारो लेखो देख चुके । ” तब

नारायनदास अपने घरकुं चले । सो मारगमें
 वा वातकी सुध आई । तब हुकम कियो जो
 सवारी फेरो । तब सवारी फेरी । सो दरबारमें
 आई । तब मनुष्यनने कही जो बादशाह तो
 जनानेमें हे । तब नारायनदास सवारी समेत
 जनाना घरके नीचे आये । उपर खबर करवाई
 जो नारायनदास नीचे ठाडे हे । तब बादशाह
 आय के उपर बारीमें ठाडो रह्यो ओर पूछी,
 “जो क्यों नारायनदास ! पीछा क्यों आया ?”
 तब नारायनदासने कही, “जो वा वात तुमने
 कैसे जानी ?” तब बादशाहने कही, “जो
 तेरे जेसेनके पांवकी धूरसुं जानी ” ।

वचनामृत १४.

ओर दू कहत हे । महाराज श्रीगोपेश्वरजी
 श्रीकृष्णरायजीके पिता, श्रीगोविंदरायजीके दादे
 ओर श्री गिरिधरजी टिकेतकं पर दादे; सो

श्रीगोपेश्वरजीके काका तिनको श्रीअंगमें मां-
 दगी भई । सो जब बहुत श्रीअंग घट्यो, तब
 घडी घडी में पूछे, “जो गोपेश कहाँ हे ?” तब
 विनके लालजीने कही, “जो दादाजी ! वे तो
 परदेश हे” तब तो आप कलु बोले नहीं ।
 परंतु घडी घडीमें पूछे गोपेश कहाँ हे ? ” ऐसे
 करत जब अचेत भये, तब बड़े लालजीने छोटे
 लालजीकुं आपकी सान्निध्य बेठाय के विनति
 कीनी, “जो दादाजी ! गोपेश आपकी सा-
 न्निध्य बेठे हैं ।” तब आपने लालजीके माथे
 श्रीहस्त फेरके आज्ञा करी, “जो चाहे जहां
 होय, मेरो तो जो कलु हे सो गोपेशमें ही
 जायगो ।” सो श्रीगोपेश्वरजी कैसे भये ?
 जिनसो सेव्य स्वरूप साक्षात् वार्ते करते ओर
 मुखसुं आज्ञा करते, “जो ओर तो सब स्वरूप
 हमसुं बोले है, एक श्री विठलेशरायजी के
 स्वामिनीजी हमसुं नाही बोले हैं ।”

वचनामृत १५.

एक समे श्रीनाथजी के यहां परदेशतें कोई उत्तम सामग्री आई, सो भगवदिच्छातें अनजाने वा सामग्रीकुं प्रसादी हाथ लग गयो। तब मुखीया भीतरीयानने टिकेतसुं खबर करी। तब टिकेतकुं बडो शोच भयो, जो एसी उत्तम सामग्री श्रीनाथजीके विनियोगमें न आई। तब टिकेतने ओर प्राचीन वृद्ध स्वरूप विराजत हते विनके आगे कही। तब ऐसो निर्धार वृद्ध स्वरूपनने कियो जो छोटे छोटे बालकनकुं सामग्रीके पास पधराय के भगवन्नामको उच्चार करवाओ, तब अष्टाक्षरको उच्चार कियो। तब वृद्ध स्वरूप हते तिनने कही जो सामग्री छुवाइ गइ। अब गायनको खवाय दो। तब टिकेतने विनति करी, 'जो जे जे ! याको कारन नही समजे।' तब वृद्ध स्वरूपने आज्ञा

करी, “जो जेसे अष्टाक्षरको उच्चार कियो तेसे श्रीमहाप्रभुजी श्रीगुसांईजीको नामोच्चारण करते तो सामग्री नहीं छुवाती ।”

वचनानृत १६.

एक समय बाबा जानीजी श्रीजीद्वार गये होते । तब मथुरादास भट्टजी हूं श्रीजीद्वार होते । सो दोउन को समागम भयो । तब मथुरादास भट्टजीने कही, “जो देखो ! श्री नाथजीकी टहलके लिये बालक कितनो पचे हे ?” तब जानीजी बाबाने कही, “ऐ तो दोय अंगुलीको कारन हे !” इतनो सुनत खेम भट्टजीकों क्रोध उत्पन्न भयो । सो मथुरामल्लजीको उंधो सूधो बोलवे लगे । ओर जानीबाबा तो झट वहां ते उठके चले गये । पीछे तें भट्टजीने विचार कियो, सो विचार करत करत जब जानी बाबा के वाक्यको आशय समझे तब मनमे बहुत

प्रसन्न भये । फेर दिन वीसके पीछे जानीबावा भट्टजीके पास गये । तब भट्टजी उठ के ठाड़े भये । बहुत आदर सत्कार करिके, बेटायके कहीं “ जो मथुरामल्ल तो वैसेही, परंतु मथुरामल्लके संगी तो बहुत आछे ” । ऐसे समाधान करके घर पठाये ।

(दो अंगुली दिखायवे को रहस्य यह हे कि प्रभु की दो अंगुली फिरे वितनो वेणुनाद जिनने सुन्यो हे, उनकी सेवामें इतनी आतुरता होय हे ।)

वचनामृत १७.

एक बनिया वैष्णव मिरजापुरमें रहत हतो । सो वहां इनकुं एक संन्यासीको संग भयो । सो दिन अरु रात अष्ट प्रहर वा संन्यासी के पास पड्यो रहे । ताको कारन यह जो

संन्यासी पढ्यो बहुत हतो । सो कहुं तें श्री महाप्रभुजीकृत ग्रंथनको पुस्तक वाके हाथ लग्यो । सो बांचके समजवे लग्यो । सो विद्या के बलसुं एसो देख्यो जो पुष्टिमार्ग सर्वो परि हे । तब प्रभुजीने कृपा कीनी ओर वाको वा बनिया वैष्णवको सत्संग मिलाय दियो । सो एक दिन वा संन्यासीकुं ग्रंथमें कोइ जगह प्रत्यक्ष संदेह दीखव लग्यो । तब वा बनिया वैष्णवकों ग्रंथ दिखायो । तब वाकुं हू पहेले तो संदेह भयो । तब वाकु सुध आइ जो अमुक पुस्तकमें याको निर्णय हे । तब संन्यासी सुं कही, “जो याको प्रत्युत्तर ओर पुस्तकमें हे।” तब संन्यासीने कही, “जो देखुं तब प्रमाण कहुं” तब ताहि क्षण बनिया अपने घर आयो । सो जीतने पुस्तक हते सो सब खोल के देखन लाग्यो । सो जा पुस्तकमें संदेह

निवृत्त हतो सो पुस्तक बहुत बिरियां देख्यो, परंतु भगवदिच्छातें संदेह निवृत्तिको पत्रा हाथ नही लग्यो । तब तो वाको चिंता भइ, जो अब संन्यासीकुं कहा जवाब दउंगो ? फिर नहाय के श्रीसर्वोत्तमजी के पाठ करवे लग्यो । सो दिन अरु रात पाठ करिवो करे । खानपान सब छोड दियो । सो तीसरे दिनको अर्धरात्रि बीती तब पाठ करत आंख लगी । तब श्रीमहा-प्रभुजीने जताइ, “जो इतनो कष्ट क्यों भुगते हे ? अमुक पुस्तकके सातमें पत्रामें देख” । इतनो सुनत खेम आंख खुल गई, तब वाही क्षण वह पुस्तक निकास सातमो पत्रा देख, तामें सेंधना धर, फिर वाही क्षण नहाय धोय, कपडा पहरेके सवेरे पुस्तक ले संन्यासीके पास चल्यो, जाय के पुस्तके दिखायो । सो देखके आछी तरहसुं निर्णय करिके वा वैष्णवसों

कह्यो “जो इतने दिनमें तो मैं ऐसे ही जानत हूँ जो तुमारे श्रीमहाप्रभुजी भूतलपेसुं पधार गये हैं, अब ऐसी जान परी जो तुमारे श्री महाप्रभुजी भूतलपे अद्यापि विराजें हैं । तू वैष्णव साचो, तू वैष्णव साचो, तू वैष्णव साचो” । ऐसे तीन बेर कह के वाको समाधान कियो ॥

वचनामृत १८.

श्रीगुसांईजी परदेश पधारे, सो सेवा बहुत भई । आपने विचारी जो प्रथम परदेश हैं, तातें यह द्रव्य श्रीनाथजीके विनियोग होय तो अच्छो । ऐसे विचारके श्रीगुसांईजी सूधे श्रीगिरिराज पधारे । सो मंडानको प्रारंभ कियो । अनेक तरहके आभरन वस्त्र, अनेक तरहकी सामग्रीको प्रमान नाहीं । एक लाख रूपीआतें बढती खर्च भयों । आभरन, वस्त्र, सामग्री सब श्री-

नाथजीको विनियोग भई । राजभोग सरे ।
 राजभोग आरती भये पीछे श्रीगुसांईजी सातों
 बालक सहित भोजन घरमें पधारे । मुखीया-
 जीने पट्टा बिछाये ओर पातर साजी । आप
 बिराजे । पास सातों लालजी बिराजे । सो
 भगवदिच्छासों प्रथम आपने मेथीके शाकमें
 श्रीहस्त डार्यो, सो श्रीमुखमें डारत खेम आपकुं
 शाक मोटो संवर्यो दीख्यो । सो आप वाही
 समे विना भोजन किये उठ ठाड़े भये । मुखी-
 याजीने श्रीहस्त धोवाय दिये । ओर आप विना
 भोजन किये उठे, तब सातों बालक भोजन
 कैसे करें ? सो वेहु श्रीहस्त धोयके उठ ठाड़े
 भये । ओर आपने यह विचार्यो जो श्रीमहा-
 प्रभुजीने तो एसी आज्ञा करी हे जो ईनकी
 सेवा सावधान होयके करियो । सो इतनी
 श्रीमहाप्रभुजीकी आज्ञा हमसुं पली नार्हीं ।

तो यह देह कोन कामकी ? एसो विचार कर आपने प्रथम पुत्र श्रीगिरिधरजीसुं आज्ञा करी, “ जो गोवर्धन ! गेरु मंगाय के हमारी परदनी ओर कोपीन रंगके सुकाय दे ” । तब श्रीगिरिधरजी तो महाचिंतामें परि गये । ओर आप तो बैठकमें पधारे । श्रीगिरिधरजी मनुष्य पठायके गेरु मंगाय घीसवे लगे । ईतनेमें श्री नवनीतप्रियाजी पधारे । सो श्रीगिरिधरजीसुं पूछी, “ जो गोवर्धन । यह कहा कर रह्योःहे ? ” तब श्रीगिरिधरजीने कही, “ जो राज ! काका-जीकी आज्ञा हे जो हमारी परदनी ओर कोपीन गेरुतें रंगके सुकाय दे । सो रंग रह्यो हूं । ” तब श्रीनवनीतप्रियाजीने कही, “ यह ले, मेरी हू झगुली ओर टोपी रंगके सुकाय दे । तब श्रीगिरिधरजीने “ हाय हाय ” शब्द उच्चार कियो । जो श्रीगुसांईजी हमारो त्याग

करके घरमेंसुं पधारे हे । अब हम निर्वाह कोन
भांतिसुं करेंगे ? सो अत्यंत शोकातुर भये ।
परंतु आज्ञा भई सो कयों चाहिए । तातें
दोनों स्वरूपनके वस्त्र रंगके सुकाय दिये । ईत-
नेमें श्रीगुसांइजी पधारे । सो आपके श्रीअंगमें
तो अग्नि जलजलायमान होय रह्यो हे । सो
आयके श्रीगिरिधरजीसुं पूछी, “ जो परदनी
ओर कोपीन रंग लीनी ? ” तब श्रीगिरिधरजीने
कही, “ जो हां, काकाजी ! यह सूके हे । ”
सो श्रीगुसांइजी आप उंची दृष्टि करी देखे तो
संग झगुली टोपी देखी । तब कही, “ जो गोव-
र्धन ! यह कहा हे ? ” तब श्रीगिरिधरजीने
कही, “ जो मैं तो गेरु घीस रह्यो हतो, इत-
नेमें श्रीनवनीतप्रियाजी पधारे, सो पूछी, ‘ जो
गोवर्धन ! यह कहा करे हे ? ’ तब मैंने विनति
करी, “ जो काकाजीकी आज्ञा हे जो परदनी

ओर कोपीन गेरूतें रंगके सुकाय दे, सो रंगु
हुं । तब आपने कही, जो ले, मेरो हू झगुली
टापी रंगके सुकाय दे । सो यहां गेरूमें पटकके
प्रधारे । सो रंगके सुकाई हे ।” इतनो सुनके
श्रीगुसांइजी चूप होय रहे । फिर हारके बिरा-
जे । या प्रसंगको आशय बहुत कठिन हे ।
जो एसो भारी मंडान, जामें सेंकडान टोकरा
शाकके हते, तामें मेथीको शाक नेक मोटो
सवर्यो, तापे आपने एसी पिचारी, यामें
जीवकी दृष्टि न पहुचे ।

वचनामृत १९.

श्रीमहाप्रभुजी जीतने दिन भूतलपें बि-
राजे, तामें श्रीअंगमें कछु आभरन नाहीं धर्यो ।
एक कंठी खरे मोतीनकी महीन श्रीकंठमें
धारण करते । सोहु श्रीनाथजीने मागी, “के जो
आपकी प्रसादो तो मैं धरुंगो ।” तब श्रीम-

हाप्रभुजीने श्रीनाथजीकुं श्रीकंठमें धराई । सो कंठी अद्यापि धरे हे । अभ्यंग समे सब आभरण वडे होय परंतु कंठी तो सर्वथा बडी न होय ।

वचनामृत २०.

पद्मनाभदासजीके माथे श्रीमथुरेशजी बिराजते, सो तुलसांसो (पुत्रीसों) बहुत हीले । दिनभर तुलसांकी गोदमें लोटे ओर अनेक तरेहके तुलसां कुं सुख देते । ऐसे करत तुलसां बडी भइ तब व्याही । तब तो तुलसांको लेयवे समुरारतें आये, तब तुलसांको बडो शोच भयो ओर कही जो, यह देह अब श्रीमथुरेशजी बिना कैसे रहेगी ? महाचिंतातुर भई । सो ताप आपसुं सहन न भयो । सो तत्काल तुलसांके पास पधारे । तुलसांसो कही, “तू शोच मत कर । मैं तेरे संग चलूंगी ।” ऐसे आपके वचन सुनके तुलसां रोम रोम प्रफुल्लित भई । सबेरो भयो ।

तुलनां घरके कामसुं पहुंचके प्रसाद ले गाडीमें
बैठी । सो वाही क्षण तुलस के हृदयमें तु श्री
मथुरेशजी दूसरे स्वरूपसुं प्रगटे । सो श्रीमुर-
लीधरजी महाराज श्रीचनश्यामजी श्रीमथुरा-
नाथजी के पिता कोटावारे के माये बिराजे हैं ।
सो श्रीमुरलीधरजी आज्ञा करते जो, “हमकुं
सेवा करत कहु अपराध पड़े तो हम तुलसां-
को स्मरण करे !” श्री मुरलीधरजी जब ली-
लामें पधारे तब श्रीकन्हैयालालजीने ऐसे कही
“जो कोटा रांड होय गइ ।” ओर अद्यापि श्री
कन्हैयालालजी ऐसी आज्ञा करे हैं जो हमारे
तां श्रीमुरलीधरजी महाराज को प्रताप हे ।

वचनामृत २१.

गजनधावनके माये श्रीनवनीतप्रियाजी
बिराजते, सो जब मंगला सनय होय तब प-
हेले तें मंगलभोगकी सामग्री सिद्ध करि क-

टोरी साज सिंहासन के सान्निध्य धर पीछे श्रीनवनीत प्रियाजीके शय्यामंदिरमें जाय, अनेक तरेहके लाड प्यार शय्यासान्निध्य बैठके करे । तब श्रीनवनीतप्रियाजी अपने श्रीहस्त-सों अपने मुखारविंदके उपरसुं चादर उंची करके जामे । आपही उठके शय्यापर बिराजे । तब गजनधावन आपको पधराय सिंहासनपर पधरावे, ओर विनति करे, “राज ! अरोगे !” तब श्रीनवनीतप्रियाजी अरोगे । एसो रीत सदाकी होती । एक दिन गजनधावन नित्य की रीत प्रमान मंगलभोग साजके श्रीनवनीतप्रियाजीको जगावन गये, सो बहुत उपाय किये परंतु आप जागे नहीं । तब तो गजधावनको बहुत चिंता भई । जो कहा अपराध पर्यो हे ? जो तीन प्रहर दिन चढ्या, आप जागे नहीं । तब तो पड़ोसमें ओर वैष्णव होते, तिनमें पूछी

“जो आज आप जागत नाहीं, सो कहा उपाय करुं ?” तब पडोसीने पूछी, “जो तुमने आज कहा कहा काम कियो हे ?” तब गजनधावनने कही, “जो कामकाज तो सब घरके भीतर कियो हे । एक आंचके लिये बहार गयो हतो । सो लेके फिर घर आय गयो ।” तब पाडोसीने पूछी, “जो बहार काढूसो कछु बतरायो ?” तब गजनधावनने कही, मैं तो काढूसों बतरायो नाहीं । मोकुं तो एक हमारी ज्ञातिको मिल्यो, सो हुक्का फूंकत चलयो जात हतो । वाहुं देवके में नाकके आडे लता देके चरयो आयो ।” तब पाडोसीने कही, “जो इनहुको मन दुःख्यो, जासुं आप जागे नाहीं । अब एक काम करो, जो एक नयो हुक्का लेके वाके घरके आगे फिरो, जब वह देखे तब घर आयके नहाइयो ।” सो जेसे पडोसीने कही बेसेही गजनधावनने कियो,

जब वो ज्ञातकेने देखे तब घर आयके नहायो नहायके भीतर जायके देखे तो श्रीनवनीत-प्रियाजी शय्याके उपर खेल रहे हे। तब सिंहासनपर पधरायके विनति करी, “जो राज ! अरोगो !” तब आप अरोगे ।

वचनामृत २२.

कांकरोलीमें पहले जो बड़े टिकेत विराजते हते सो राजभोग आरती कर सब सेवातें पहुच अनोसर भये पीछे वहार आपके विराजें और मनुष्य पास ढाड़ो होय सो हेलो करे—जो चरणस्पर्श होय हे !! जाको करने होय सो चलो ! सो हेला सुनके वैष्णव आवें । सो कोई तो नहायो होय, कोई विना नहायो होय, कोई बजारके कपडा पहरे भये छीयेछाये सब आवें, सो चरणस्पर्श करके जाय । तब आप सूधे भोजनकुं पधारे । एसे करत बहुत दिन

भये । तब भैया बंदनमें चर्चा चली, जो वैष्णव बजारमेंसुं छीछायके चरणस्पर्श कर जाय ओर ता पीछे आप बिना नहाये भोजन करे हें सो बात उचित नाहीं । सो भैयाबंद चार स्वरूप एकमत करके कांकरोलीवारे टिकेतके पास पधारे । आपने बहुत आदरसत्कार कियो । फिर टिकेतने विनति करी, “जो आपको पधारनो कोन कारन भयो ? सो कृपाकर कहिये ।” तब चारों स्वरूप एक संग बोले, “जो आप सब कंठीबंधको चरणस्पर्श राजभोग पीछे देओ हो, तामें कोई नहायो होय, कोई बजारके कपडा पहंगा होय, सो चरणस्पर्श कर जाय, पीछे आप बिना नहाये, सखड़ी भोजन करो हो, सो बात उचित नाहीं । तब टिकेतने कही, “जो बात तो प्रमान हे, परंतु हमको श्रीद्वारिकानाथजीकी सेवा करतमें अपराध पड़े, सो

हम जाने जो वैष्णवके छियेसुं पवित्र होयंगे ।
जाके लिये इतनो करें हैं । ता उपरांत जेसी
आज्ञा” इतने वचन टिकेतके सुनके चारों
स्वरूप चकित होय रहे, कही “जो आपके म-
नको अभिप्राय हमने जान्यो नाहीं । ” ऐसे
कही के बहुत प्रसन्न भये । सोइ रीत अद्यापि
कांकरोलीवारेके घरमें चले हैं, ताते बडेनको
मंदभागी जीव कहांसुं जाने ?

वचनामृत २३.

कांकरोलीवारेके घरमें एक घोडा हतो ।
सो घोडा दीखवेमें बहुत सुंदर अरु वेसोही
चलवेमें । सो टिकेतको ममत्व घोडापै बहुत
भयो । सो सोनेको गहना, रत्नजडित ओर
कीनखापको साज, ओर खोराकमें दीय चीज
जलेबी अरु दूध । सो या तरहसुं वरस पांच
सात कारखानो चलयो । सो लाखन रुपीआ

उड गये । घर सबरो घोडा खाय गयो । लोगनने बहुतेरे समझाये, परंतु टिकेतने काहूकी न सुनी । और जगतमें अपकीर्तिको तो कहा कहेनो ? ऐसे करत कोई प्राचीन स्वरूप टिकेतके मित्र होयंगे सो पधारे । तब टिकेतने बहुत आदरसत्कार कियो । बिनति की, “कहो ! केस पधारनो भयो ?” तब प्राचीन स्वरूपने कही, “कलु कहेवेकु आयो हुं,” तब टिकेतने कही, “भले सुखेन कहो, आप न कहोगे तो ओर कोन कहेंगो ? परंतु जो बात आप कहेवेकुं आये हो, सो बात तो मत कहियो । क्यों ? जो या घोडापैं तो श्री द्वारिकानाथजी आप सवारी करें हैं ।” इतनो सुनके प्राचीन स्वरूप बहुत प्रसन्न भये । और कही, “जो अब के या घोडाकों पहेलेतैं अधिक लाड लडाइयो ।” इतनो कह के घर पधारे । तातैं बड-

नके प्रभावको जीव कहा जाने ?

वचनान्त २४.

बहुरी कोई समे कांकरोलीमें भवैया आये ।
 सो खेल बहुत सुंदर कियो । सो नित्य भवाई
 होय । सो जब एक बरस दिन भयो, तब ज-
 गतमें लोग काहव लग जो । टिकेत भवैयाको
 घर खवावे हैं । एने करत कोई परदेशी बालक
 कांकरोली पधारे । टिकेतसुं कही, “जां वृथा
 पैसा भवाईमें खराब करने ताको कारन कहा?”
 तब टिकेतने कही, “हां, आजको दिन तो
 करावेंगे, फिर जैसे आप आज्ञा करोगे तेसे
 करेंगे ।” सो वा दिना दोनो स्वरूप संग पधारे ।
 भवाईको प्रारंभ भयो इतनेमें श्रीद्वारिकानाथ-
 जी पधारे, सो आयके टिकेतकी गोदमें विराजे
 सो परदेशी बालककुं दर्शन भये । सो दर्शन
 करके बहुत प्रसन्न भये । भवाई पूरन भई,

तब घर आये । तब टिकेतने कही, “भाई ! कहो, अब कैसे करेंगे ?” तब परदेशी वालकने कहा, “जो अब ऐसे करो जो यह भवैया कोई प्रकारसुं सदा यहांही रहे आवे । कहूं जान न पावे ।” ऐसे कहके पधारे । अब बडेनकी बातमें जीवकी गम कहांताई पहुचे ?

वचनामृत २५.

अब श्रीमहाप्रभुजीने सवनके उपर टोंक करी हे, सो लिखें हैं । प्रथम श्रीमहारानीजीकुं, पीछे श्रीनाथजीकुं, पीछे ब्रजभक्तनकुं । श्रीकृष्ण जब द्वारिकाजासुं स्वधाम पधारे, तब आठा पट्टरानी ओर सब अ पको परिकर महाउदास होयके, अर्जुनकुं संग लेके ब्रजमें आये । तब श्रीमहारानीजी आभरनसहित बडे उत्साहसों सामे पधारे । सो देखके विनकुं दुःख बढती लग्यो । ओर दूसरे जब वसुदेवजी प्रभुनकुं प-

धराय लावत हते, तब जल नासिका ताँई आयो, तब गभराये । तातें आपने दोनो जगह यह टोक करी हे, “ जो आखिर तो यमकी बहन !” ओर श्रीनाथजीको नाम धर्यो “ दुष्ट-दुर्बुद्धिहेतवे नमः ।” श्रीस्वामिनीजीकुं जो ऐसे प्रभुसो हू मान । श्रीयशोदाजीसों कह्यो, जो यह जननी ! जो तबक दहींके लिये प्रभुनकों बांधे । ओर ब्रजभक्तनको कह्यो जो स्नेहमार्ग छोडके शरणमार्गमें आवत भाये । जब इंद्रने वृष्टि करी, तब गभरायके प्रभुनसों प्रार्थना करी, जो हमारी सहाय करो । परंतु जो कहेते जो प्रभुनको यत्न करो तो आप न टोंकते, परंतु कह्यो जो हमारी सहाय करो, तातें श्रीमहाप्रभुजीने टोंके । जो स्नेहमार्गकुं छोडके शरणमार्गकुं आवत भये ।

॥ इति वचनामृत २५ सपूण ॥

શ્રીગોવર્ધનનાથજીના પ્રાકટથની વાર્તા.

શુદ્ધ વ્રજ ભાષામાં, તેમજ શ્રીનાથજીનાં કેટલાંક ધોલ અને નાથજીના ઉત્તમ ફોટા સાથે, ગ્લેઝ, ચીકણા કાગળમાં છપાવી છે કીંમત છ આના.

શ્રીપુરુષોત્તમસહસ્રનામ સ્તોત્રમ્.

(સટીક ગુજગતી ભાષામાં વિસ્તૃત વિવેચન પૂર્વક કરેલું
શુદ્ધ ભાષાન્તર.) [આવૃત્તિ ૨ જી]

આ ગ્રન્થમાં શ્રીપુરુષોત્તમનાં હજાર નામ શ્રીમદ્ ભાગવતમાંથી તત્ત્વરૂપે દોહન કરી શ્રીમદ્વલ્લભાચાર્યજીપ્ર પ્રકટ કરેલાં છે કે જેનો પાઠ કરવાથી શ્રીમદ્ ભાગવતનો પાઠ કરવા જેટલું ફલ પ્રાપ્ત થાય છે આ ગ્રન્થ ઉપર પંચમ ગૃહના તિલકાયત શ્રીરઘુનાથજી મહારાજે ' નામચન્દ્રિકા' નામનો સસ્કૃતમાં વિસ્તૃત ટીકા લખી છે. તે ટીકાનું મૂલ પ્રલોક સાથે ભાષાન્તર (કે જે અત્યાર સુધી પ્રકટ થયું નથી) આપવામાં આવ્યું છે તેમજ શ્રુતિ, સ્મૃતિ, પુરાણ સહિતા ગતા આદિ ગ્રન્થોના પ્રમાણથી તે નામોનું સમય રીતે પ્રતિપાદન કરવામાં આવ્યું છે તેથી દરેક વેદગ્રન્થને તે નિત્યનિયમમાં પાઠ કરવા સ્વાસ્થ્ય ઉપયોગી છે શ્રીમહાપ્રભુજી તથા ટીકાકાર શ્રીરઘુનાથજી મહારાજના ઉત્તમ ફોટા સાથે છેતાં કીંમત માત્ર રૂ. ૧-૦-૦ એક રૂપીઓ રાખી છે.

શ્રીમદ્ ગોસ્વામી શ્રીગોકુલનાથજી (માઝાપ્રસંગવાઝા) વિરચીત.

॥ ભાવસિન્ધુ ॥

આ પ્રથમાં શ્રી મહાપ્રભુજી તથા શ્રીગુસાંઈજીના નિજ અંતરંગ કૃપાપાત્ર ભગવદિયો ૮૪ અને ૨૬૨ વૈષ્ણવો પકી મહાનુભાવો પવા માત્ર ૨૨ વૈષ્ણવોની વાર્તાના ભાવ શ્રી ગોકુલેશજીએ આધુનિક જીવો ઉપર કૃપા કરો જણાવ્યા છે. હાલ ૮૪ અને ૨૬૨ વૈષ્ણવોની વાર્તા આપણે વાંચીએ છીએ તે વાર્તાઓ પણ આ શ્રીગોકુલેશજીએજ પ્રકટ કરી છે આ આ વધી વાર્તાઓમાં મુખ્ય અને જેના ભાવ અતિ ગુઢ છે, જેના સ્નેહની પરિમોમા નથી જેઓ કોટિમાં ગિરતા ગણાયા છે એવા ભગવદ્વાયોના વાર્તાના ભાવ શ્રીગોકુલેશજીએ જણાવ્યા છે તે ઉપરાંત કેટલોક શાધ કરી વોજી વધુ માહિતી પણ આપી છપાવ્યું છે કીં. ૧ ૪-૦ સવા રૂાઆ.

સ્વરૂપદર્શન. (આવૃત્તિ ૪ થી)

આ પુસ્તક શ્રીનાથજી આદિ માત્ર સ્વરૂપ, શ્રીમહાપ્રભુજી, શ્રીગુસાંઈજી, સાતલાલજી, આદિ ઘણા પ્રાચીન અને હાલ મૂતલ ઉપર વિરાજતા ઘણા શ્રીગોસ્વામી ચાલકોના ઉત્તમોત્તમ, મુંદર દેશિયમાન, ચીત્રો મળી લગભગ ૧૪૦ સ્વરૂપના ચિત્રોનું એક સુંદર પુસ્તક યાને આલ્બમ સારા ઊંચી જાતના આર્ટપેપર ઉપર છપાવી મહાન્ સ્વચ્છ અને અત્યંત પરિશ્રમે તૈયાર કરવામાં આવ્યું છે આ પુસ્તકની પ્રથમાવૃત્તિ થયા પછી શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીગિરિધરલાલજી

મહારાજ શેરગઢવાલાનો આજ્ઞાનુવાર ને તેમણે કરેલી સૂચના મુજબ ચૂટતાં ચિત્રા મહાન સ્વર્ણ તયાર કરાવી પાતે બતાવેલા અનુક્રમ પ્રમાણે ચિત્રો ગોઠવી તયાર કરવામાં આવ્યું છે. જેથી દરેક વૈષ્ણવોએ આ પુસ્તક મંગાવી તેમાં આપેલાં ચિત્રજ્ઞાનાં દર્શનનો લાભ લેવા ચુકવું નહિ સુંદર દર્શન્યમાન ચિત્રોનું શુદ્ધ પાકું પુટું કરવામાં આવ્યું છે. છતાં ન્યાંચ્છાવર માત્ર નહીં જેવાજ ફક્ત રૂ. ૨-૦-૦ બે રૂપો આ રાખવામાં આવી છે.

શ્રીમદ્દુર્ગામહારાજકૃત ૩૨ વચનામૃત,

તથા દીનતા આશ્રયનાં ૭૫ કાવ્યોનો સહિત,

આ શ્રીમદ્દુર્ગામહારાજે વૈષ્ણવોના કવ્યાણને માટે પોતાના સ્વમુખે જીવને શિક્ષાર્થે પરમ કૃપા કરી ૩૨ વચનામૃત બનાવ્યાં છે. આ પુસ્તક અત્યાર સુધી અપ્રગટીત હતું તે મહાન પરિશ્રમે શોધી લાવી શુદ્ધ કરી છપાવ્યું છે. વલ્લો મહારાજશ્રીએ ઘણા છપ્પન ભોગ કર્યા છે તે પૈકી શ્રીદ્વારકાના છપ્પન ભોગના વર્ણનનું ધોલ ગાવાના રાગમાં બનાવ્યું છે તે તથા મહારાજશ્રીએ કરેલાં દીનતા આશ્રયનાં ૭૫ પદ તથા ઢાકોરજીમાં કરેલા છપ્પન ભોગનું વર્ણન તથા શ્રીમહારાજશ્રીના જીવનચરિત્રના કેટલાક પ્રસંગો વગેરે મહાન પરિશ્રમે શોધી લાવી પ્રકટ કર્યું છે. આવું અપ્રકટીત સાહિત્ય વૈષ્ણવોના કરકમલમાં મુકવાથી અલભ્ય લાભ સમજી તાકીદે ખરીદવું જોઈએ. કીંમત માત્ર ૦-૬-૦ આના.

શ્રીમદ્ ગોસ્વામી શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી મહારાજનાં વહુજી
મહારાજશ્રીની સાસુ આજ્ઞાથી

તૃતીય ગૃહ તિલકાયિત-કાંકરોલીસ્થ.

શ્રીમદ્ગોસ્વામી શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજકૃત.

૧૨૦ વચનામૃત.

શ્રીગિરિધરલાલજી મહારાજશ્રીએ પોતે ૮૦ વર્ષની વૃદ્ધ
વયે નિજાથી જીવો ઉપર કૃપા કરવા સં ૧૯૩૩ની માલમાં
રૂબોડ પધારી વૃષ્ણચોના કલ્યાણ માટે પ્રાચીન વાર્તાઓ
સંપ્રદાયનું ગુઢ રહસ્ય, વૃષ્ણચોને મક્તિ નિતો ભાવના ઉત્પન્ન
ધાય તેવા પ્રસંગા, શ્રીઠાકોરજીના સ્વરૂપનો સેવા શાળા
રની ધર્મના વર્ગે ગુઢ અને ગુપ્ત રહસ્યમય પ્રસંગોનું વર્ણન
કરી, જીવના શિક્ષાથી કૃપા કરી, સ્વમુક્ષારવિદ્યો વચન
સુધાનું પાન કરાવ્યું ૧૨૦ વચનામૃત લખાવ્યાં છે જે અન્યાર
સુધો અપ્રકાશિત હતાં. તેની બેચાર પ્રતો એકત્ર કરી,

(અક્ષર આ લાઇન જેવાજ મોટા અક્ષરથી)

શુદ્ધ કરા છપાવ્યો છે મોટો સાદૃશ્યનાં ૪૦૦ ઉપરાંત પૃષ્ઠ
તેમજ પ્રાચીન શ્રીગિરિધરલાલજી, તથા શ્રીબાલકૃષ્ણલાલજી
તથા તેમના વિન્યલાલસ્થ બેલાલજી, તથા હાલ વિગતના
નૃતિયગૃહતિલક શ્રીમજમૂળલાલજી તથા ચિ. શ્રીવિદ્યુત
નાથભાવા ધમ છ પાટા આપવામાં આવ્યા છે. આ પ્રાચીન
છપાવવા માટે અમોષ જ્ઞાન શ્રીકાં રોલી જઈ શ્રીમદ્ગોસ્વામી
મહારાજને વિનંતી કરી હતી જેથી પોતે અત્યંત પ્રસન્નતા
પૂર્વક છપાવવા આજ્ઞા આપી છે. માટે દરેક વૃષ્ણચો
એવડ્ય સ્મરણ કરી વાંચવું જોઈએ ન્યોછાવર માત્ર રૂ ૨-૦-૦

તમારાં ઘરોને કેવી રીતે શણગારશો ?

જુઓ ! સાંભળો ? વિચારો ?

પચાસ વરસથી વેણચી ફરીઆદ કરે છે કે, સસ્તામાં રસ્તાં છેલ્લો ઢબનાં આંચ ઠરી જાય તેવાં સાંપ્રદાયિક ચિત્રો ક્યાં છે ? આવાં ચિત્રો ન મળ્યાં જેથી ગમે તેવાં ચિત્રો અમારા ઘરમાં ભરાઈ ગયાં.

પણ સબુર ! જરા સાંભળો ! તમારી પ ફરીઆદ દૂર કરવા માટે હાલમાં અમોષ ઘણા મોટા સ્થરચે ઉત્તમોત્તમ ચિત્રકલાના નમુનારૂપે અતિ સુંદર રંગીન ચિત્રો ત્રણ પાંચ સાત ને દશ જુદા જુદા પ્રકારના ઉત્તમ રંગોમાં છપાવ્યાં છે. (સોનેરી રંગ સુદ્ધાં) સારામાં સારા સુંદર ને સુશોભિત ચિત્રોનો એક મહાન્ સંગ્રહ મોટા સ્થરચે તૈયાર કર્યો છે આ ચિત્રો જોતાંજ તમારી આંચ ઠરી જશે, હૃદયમાં અવનવા ભાવો ઉભરાશે, ને પ્રેમ ભક્તિના અંકુરો ઉત્પન્ન થશે. આટલુ છતાં તેની ન્યોછાવર પણ તદ્દન ચિત્રોના કામના પ્રમાણમાં તો નહિ જેવીજ છે એમ માલુમ પડશે.

ચિત્રોના નમુના.

શ્રી નાયજી સાઈફ ૧૬×૧૧	{	સાત જાતના રંગમાં ન્યો.
શ્રી મહાપ્રભુજી „ „		દરેકના બે આના.
શ્રી યમુનાજી સાઈફ ૧૪×૧૨	{	સોનેરી રંગ સાથે દશ
શ્રી ગુસાઈજી.		જાતના રંગોમાં ન્યોછાવર દરેકના ત્રણ આના.

શ્રી નાયજી ૯×૭, શ્રી યમુનાજી ૯×૭,

શ્રી મહાપ્રભુજી ૯×૭, શ્રી નાયજીને શ્રી મહાપ્રભુજી પચિત્રાં ઘરાવે છે. શ્રી કાંકરીલીવાળા બંને લાલવાવા, શ્રી ટીકેત શ્રી દામોદરલાલજી, શ્રી રણછોડલાલજી અમદાવાદવાળા, ન્યો. દરેકનો એક આનો. વગેરે

પ્રથેક માતાપિતાપ પોતાની કન્યાઓને આ પુસ્તક
વંચાવવું જ જોઈપ.

કન્યા શિક્ષણ. (હિન્દીમાં)

(આવૃત્તિ ૧ લી)

નાની ઉમ્મરની કેવલ કુમારિકા બાળાઓ માટેજ, તદ્દન સાદી ને સ્થેલી નાના બાલકોનીજ ભાષામાં ઘોલાય તેવી શૈલીથી, ગૃહ શિક્ષણ સાથે ધર્મ શિક્ષણ મળે તેવું નાનકડું પણ રમુજી પુસ્તક ૨૮ પાઠમાં રચેલું છે. ઢ્ઢેનોને ગાઘાનાં પ્રભાતીયાં, હાલરહાં, રમતોનાં ગીતો વગેરે પણ આપેલાં છે.

હિન્દી સાહિત્યમાં એક પણ પુસ્તક નાની બાલોકાઓ માટે આવા પ્રકારનું જોવામાં આવતું નથી. દરેક ઢ્ઢેનો પાસે હોવુંજ જોઈપ માટે આજેજ મંગાવો લ્યો. કીંમત ફંદપણ નફાની આશા રાહ્યા વિના ફક્ત ચાર આના જ છે.

અમારાં સઘળાં પુસ્તકો મલ્લવાનાં ઠેકાણાં.

- ૧ લલ્લુભાઈ છગનલાલ દેશાઈ. રીચીરોડ. પતાસાની પોલ
પાસે, નં. ૧૧૦, મેઢા ઉપર—અમદાવાદ
- ૨ પ્રસિદ્ધ બુકસેલરો અમદાવાદ
- ૩ શ્રીપુષ્ટિમાર્ગીય પુસ્તકાલય... .. નડીઆદ.
- ૪ ચુનીલાલ કૃષ્ણાશંકર શર્મા, ભુલેશ્વર મહારાજનો
મોઢવાઢો, મોટું મંદિર—મુંવાઈ (૨)
- ૫ પંડિત નારાયણ મુલ્લજી બુકસેલર-કાલવાદેવોરોડ મુંવાઈ (૨)
- ૬ જીવનલાલ પન્ડ સન્સ. બુકસેલર કાલવાદેવોરોડ મુંવાઈ (૨)
- ૭ કીસનીઆ કીકાભાઈ દેશાઈ શેરો શ્રીનાથજીનું મંદિર-વઢોદરા
- ૮ ગોપાલદાસ ગીરધરદાસ પરીસ મોટું મંદિર-સુરત.
- ૯ મનીરામ ઘલદેવ કીશનપુરા—ઈંદોર.
- ૧૦ મહાદેવ શાલીંગરામ શ્રીનાથદ્વાર.
- ૧૧ મકનજી જઠાભાઈ (મુગટવાલા) શ્રી દાડજીનું મંદિર-વઢોદરા
- ૧૨ રવજી ભાણજી. જાંડીયા બજાર કરાંચી

